विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – षष्ठ **दिनांक -18-10-2020**

विषय -हिन्दी **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज समास के बारे में पुनः अध्ययन करेंगे।

समास

अनेक शब्दों को संक्षिप्त करके नए शब्द बनाने की प्रक्रिया समास कहलाती है; जैसे–चौराहा, पीतांबर आदि।

समास के भेद – समास के मुख्यतः छह भेद हैं।

1. तत्पुरुष समास
2. कर्मधारय समास
3. द्विगु समास
4. अव्ययीभाव समास
5. बहुब्रीहि समास
6. द्वंद्व समास।

1-अव्ययीभाव समास – जिसका पद प्रधान हो और समस्त पद अव्यय हों, उसे अव्ययीभाव कहते हैं; जैसे—प्रत्येक, यथाशक्ति, रातोंरात, आजन्म।

2. तत्पुरुष समास – इस समास में उत्तरपद प्रधान होता है और पूर्वपद गौण होता है। तत्पुरुष समास की रचना में समस्त पदों के बीच में आने वाले परसर्गों; जैस–का, से घर आदि का लोप हो जाता है; जैसे-रसोई घर = रासोई + घर = रसोई के लिए घर। पुस्तकालय = पुस्तक + आलय = पुस्तक का आलय।

3. कर्मधारय समास – कर्मधारय समास में पूर्वपद विशेषण तथा उत्तरपद विशेष्य होता है। अथवा पूर्वपद और उत्तर पद में उपमेप| उपमान का संबंध होता है; जैसे-नीलकमल = नील + कमल = नीलाकमल। कमलनयन = नयन + कमल = कमल के समान नयन।

4- द्विगु समास – द्विगु का शाब्दिक अर्थ है-'दो' इस समास का पहला शब्द संख्यावाचक विशेषण तथा दूसरा पद संज्ञा होता है। इस समास का बोध कराता है तथा इसका दूसरा पद प्रधान होता है; जैसे– त्रिलोक, पंचवटी, अठन्नी, चौराहो, पखवारा, शताब्दी।

5- द्वन्द समास

द्वन्द समास की परिभाषा

जिस समस्त पद में दोनों पद प्रधान हों एवं दोनों पदों को मिलाते समय 'और', 'अथवा', या 'एवं ' आदि योजक लुप्त हो जाएँ, वह समास द्वंद्व समास कहलाता है।

उदाहरण-

- अन्न-जल : अन्न और जल
- अपना-पराया : अपना और पराया
- राजा-रंक : राजा और रंक

6-. बहुव्रीहि समास – जिस समास में पूर्वपद तथा उत्तरपद दोनों में से कोई भी पद प्रधान न होकर कोई अन्य पद ही प्रधान हो, वह बहुव्रीहि समास कहलाता है; जैसे-लंबोदर, मुरलीधर, मृगनयनी, त्रिलोचन, पीतांबर।।

लिखकर याद करें।